Academe *Journal of Education & Psychology* *ISSN: 2249-040X*
Volume-15, Issue-2, Year-2025 (July-December) *Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 6.25)*
PP: 411-419 *Journal Website www.academejournal.in*

महात्मा गांधी के चंपारण यात्रा एवं उसकी प्रमुख विशेषताएं

प्रमोद कुमार साह

(शोधार्थी)

राजनीतिक विज्ञान विभाग,ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय,
कामेश्वर नगर दरभंगा

सारांश:

गांधी जी का चंपारण यात्रा न केवल चंपारण वरन गांधी जी को भी विशेष बनता है। उनकी यात्रा कई विशेष पहलुओं को स्पर्श करती है। गांधी जी दो दशक के दक्षिण अफ्रीका प्रवास से वापस आने के बाद अपने राजनीतिक गुरु गोपाल कृष्ण गोखले के मार्गदर्शन अनुसार भारत भ्रमण के लिए निकल पड़े। इस दरमियान उन्होंने रेल के तीसरे दर्जे में ही अधिकतर यात्राएं की, रेल संपर्क से जुड़े गांव व कस्बे का यात्रा किया। गांव के किसान मजदूर एवं आम आदमी से जुड़े, वे जानते थे कि भारत अभी सत्याग्रह के लिए तैयार नहीं है। सत्याग्रह के विभिन्न पहलू पर गांधी जी अपना भाषण एवं लेख विभिन्न अखबारों को भेज रहे थे जिससे अधिक से अधिक लोगों तक सत्याग्रह का संदेश जा सके। इस भ्रमण के मध्य ही 11 अप्रेल 1917 को राजकुमार शुक्ल के आग्रह पर बिहार के सबसे बड़े शहर मुजफ्फरपुर पहुंचे।

गांधी जी सत्याग्रह के लिए जमीन तलाश रहे थे, वे राजकुमार शुक्ल के कहने पर चंपारण किसान के बारे में हकीकत जानने आए थे। जैसा कि राजकुमार शुक्ल ने गांधी जी को कानपुर में बताया और बिहार आने का आग्रह किया था लेकिन गांधी जी जब चंपारण आकर किसान के दुर्दशा को देखा और जाना तो उन्होंने लिखा कि यहां किसान का दुर्दशा राजकुमार शुक्ल के बयान से कई गुना अधिक है। जिसे नजदीक से समझने एवं उनके बयान को दर्ज कर उनके समाधान की कोशिश करना मानवता के लिए अति आवश्यक है। इससे पहले गांधी जी दक्षिण अफ्रीका में अहिंसक प्रतिरोध का प्रयोग कर चुके थे जिसमें उन्हें काफी सफलता प्राप्त हुई थी। गांधी जी चंपारण के लोगों का आवाहन किया, किसान काफी उत्साहित थे उन्होंने अपने दु:ख-दर्द को गांधी जी से कहा, जिसे दर्ज कर गांधी जी उन पर हो रहे अत्याचार के खिलाफ जिस तरीके का इस्तेमाल किया उसे भारत में गांधी के प्रथम सत्याग्रह माना जा सकता है लेकिन गांधी जी इसे सविनय अवज्ञा मानते थे।

भारतीय उपमहाद्वीप में प्राचीन काल से ही नील की खेती हो रही थी जो भारत में बंगाल से बिहार तक फैला हुआ था। यूरोप के बाजारों पर नियंत्रण करने के लिए ईस्ट इंडिया कंपनी ने बंगाल और बिहार में बड़े पैमाने पर नील की खेती करवाना शुरू किया। बाजार के मांग के कारण अधिक से अधिक खेतों में नील की खेती करवाने के लिए किसानों पर दबाव डालने लगे। 19वीं सादी के उत्तरार्ध तक सिर्फ चंपारण में एक लाख एकड़ पर नील की खेती होने

© Copyright @ Authors

लगा। नील की खेती कम ना हो इसलिए उन्होंने 'तीनकठीया' (3/20 भाग पर) कानून बनाया इस कानून को न मानने वाले से शरहबेशी (फैक्ट्री का बढा हुआ किराया) नाम से टैक्स वसूल किया जाता था। शरहबेशी ना चुकाने वाले के साथ अंग्रेज निलहे बड़े बर्बरता से पेश आते थे, उन किसानों का जमीन कुर्क कर वेदखल कर दिया जाता था।

गांधी जी के चंपारण यात्रा से पहले भी किसानों ने इस तिनकठिया व शरहबेशी कानून के खिलाफ आवाजें उठाई, नील की खेती न करने की सामूहिक कसमें खाई लेकिन वे सफल न हो सके। राजकुमार शुक्ल ने इन समस्याओं को कांग्रेस के 'लखनऊ अधिवेशन' में उठाया और गांधी जी को चंपारण आने के लिए राजी कर लिया। गांधी जी अपने सत्याग्रह के तरीके से इस समस्या को सदा के लिए समाप्त कर दिया।

गांधी जी का चंपारण यात्रा में उनकी केवल सहभागिता थी बाकी के सारे व्यवस्था चंपारण एवं बिहार के स्थानीय लोगों का था। सबसे अहम भूमिका राजकुमार शुक्ल का था। गांधी जी के पक्ष को मजबूत बनाने के लिए आचार्य जे० बी० कृपलानी के साथ-साथ डॉक्टर राजेंद्र प्रसाद, ब्रजकिशोर प्रसाद इत्यादी थे। गांधी जी के चंपारण आने से किसानों में भी ऊर्जा का संचार हुआ, वह अपने समस्या लेकर गांधी जी के समूह को परिचय कराया, निलहों के बर्बरता एवं काले कानून (तिनकाठिया व शरहबेशी) से त्रस्त किसानों ने गांधी को अपना बयान लिखाया अपना दर्द बताया। इस प्रकार माना जा सकता है कि इस काले कानून को समाप्त करने में स्थानीय लोगों की भूमिका सराहनीय था।

यूं तो गांधी जी का भारतीय राजनीति में प्रवेश बहुत पहले हो चुका था, लेकिन चंपारण सत्याग्रह का प्रभाव न केवल भारत में बल्कि ब्रिटिश पार्लियामेंट में इसकी चर्चा, ब्रिटेन के प्रमुख अखबारों में चर्चा, जिस कारण गांधी जी का चंपारण यात्रा भारत के राजनीति में प्रमुखता से प्रवेश माना जा सकता है। जिस कार्य से अंग्रेजी सरकार को भी घबराहट होने लगी थी।

गांधी के चंपारण यात्रा से पहले भी कई प्रकार के अंग्रेजी निलहों के खिलाफ आवाज उठा लेकिन निलहे उसे बर्बरता पूर्वक कुचल देते थे और किसानों पर एक नई प्रकार के टैक्स जोड़कर उसका खर्च भी भारतीय किसानों से ले लेते थे। गांधी जी ने सत्याग्रह के जिस तरीके का आविष्कार किया उसे कुचलने अथवा रोकने के लिए अंग्रेजी सरकार के पास कोई ठोस वजह सुझाई ही न पड़ा, उल्टे उसे अपनी प्रशासनिक सुधार कर गांधी के विरोध को समाप्त करने के लिए तिनकठिया जैसे काले कानून को समाप्त करना पड़ा।

गांधी जी के चंपारण यात्रा का प्रमुख कार्य तिनकठिया कानून की समाप्ति माना जा सकता है लेकिन इसके साथ ही चंपारण और उत्तर बिहार में अशिक्षा के अंधकार को समाप्त करने का भी निश्चय किया गया। मयकॉले के शिक्षा नीति के खिलाफ नई तालीम व प्रोढ़ शिक्षा नीति की शुरुआत हुई। कई स्कूल खोले एवं स्वयंसेवक की बहाली कर बुनियादी शिक्षा को आगे बढ़ने का काम किया। गांव में व्याप्त गंदगी से होने वाले बीमारी के बारे में लोगों को बताया

© Copyright @ Authors

एवं स्वच्छ व स्वस्थ के गुर लोगों को सिखलाया। इस बहुत सारे परिवर्तन के कारण गांधी जी स्थानीय लोगों के दिलों में एक विशेष स्थान बना लिए।

विषय प्रवेश : गांधी जी का चंपारण यात्रा (1917) भारत में उनका पहला सत्याग्रह था जो तिनकठिया प्रथा (3/ 20 हिस्से पर नील की खेती) से त्रस्त किसानों के शोषण के खिलाफ थी। निलहे के बर्बरता एवं शरहबशी जैसे काले कानून से किसानों को बचाने एवं बिहार को अशिक्षा गंदगी से उभरने के लिए गांधी जी का यह यात्रा ऐतिहासिक माना जाता है। इसके मुख्य विशेषताएं है अहिंसक प्रतिरोध, भारत में सविनय अवज्ञा का प्रथम प्रयोग, जिसे गांधी जी अभी नहीं करना चाहते थे, लेकिन किसानों के दु:ख दर्द को जानकर उन्होंने इसकी शुरुआत की फलत: तिनकठिया व सरहबेशी जैसे काले कानून का अंत हुआ। गांधी के यात्रा में स्थानीय किसानों एवं बिहार के प्रमुख विद्वान वकीलों का सहयोग भी काफी सराहनीय माना जा सकता है। गांधी जी की यह यात्रा किसानों के दिमाग से नीलहे की डर को समाप्त करने का भी कार्य किया। तिनकठिया प्रणाली के विरुद्ध स्थानीय नेताओं का सहयोग और ब्रिटिश सरकार को झुकने के लिए मजबूर करना, जिसे चंपारण कृषि अधिनियम के रूप में किसानों को राहत दिलाई और अंत में बिहार में साफ सफाई के प्रचार के साथ प्राथमिक शिक्षण की व्यवस्था करवाना।

1. भारत का पहला सत्याग्रह : दक्षिण अफ्रीका में दो दशक प्रवास के बाद 1914 - 15 में जब गांधी जी भारत वापस लौटे तो वह एक सफल वकील, संपादक, भोजन के प्रयोगकर्ता, आंदोलनकारी के साथ-साथ वहां रह रहे एक छोटे से भारतीय समुदाय के निर्विवाद नेता बन चुके थे। परन्तु अब वह गोपाल कृष्ण गोखले से मिलकर भारत के आजादी के लिए कांग्रेस में काम करना चाहते थे। गांधी जी का मानना था कि भारत बहुत सारी समस्याओं से ग्रस्त है जिसका एक ही रामबाण दवा है सत्याग्रह।[1]

दक्षिण अफ्रीका में गांधी जी ने एक ऐसे प्रतिरोध के तरीके का आविष्कार किया जो भारत के उदारवादी नेताओं के विनम्र प्रार्थना पत्रों एवं क्रांतिकारी के हथियारबंद तरीकों से अलग था। जिसमें अन्यायकारी कानूनों का सचेत उल्लंघन शामिल था जिसका नाम उन्होंने सत्याग्रह दिया इसमें सत्याग्रही स्वयं या समूह में गिरफ्तारी देते थे और तब तक देते थे जब तक अन्यायकारी कानून को निरस्त नहीं कर दिया जाता।

गांधी जी अपने भारत भ्रमण के दरमियान पूरे देश में सत्याग्रह की जमीन तलाश रहे थे इसी बीच उन्हें फरवरी 1916 को बनारस हिंदू विश्वविद्यालय की स्थापना समारोह के लिए आमंत्रित किया गया। इस स्थापना दिवस समारोह में गांधी जी ने भाषण देते हुए मयकॉले की शिक्षा नीति पर सवाल उठाए एवं सभा में आए हुए राजा महाराजाओं को तर्क दिया कि आप जिस स्वर्ण हीरे जवाहीराज से सुसज्जित वस्त्र व आभूषण पहनते हैं उसके जगह इन द्रव्यों का उपयोग देशवासियों के कल्याणार्थ करें[2] तो आप देश के सच्चे सिपाही व महाराज कहलने योग्य होंगे।

© Copyright @ Authors

Academe *Journal of Education & Psychology* *ISSN: 2249-040X*
Volume-15, Issue-2, Year-2025 (July-December) *Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 6.25)*
PP: 411-419 *Journal Website www.academejournal.in*

लखनऊ में चंपारण का एक किसान राजकुमार शुक्ल गांधी जी से मिलकर उसे चंपारण के किसानों के दुर्दशा के बारे में बताया व एक दिन के लिए चंपारण आने का आग्रह किया लेकिन गांधी जी उसे समय इस बात को गंभीरता से नहीं लिया और इस बात पर बाद में विचार करने का वादा किया, फिर अपने यात्रा के अगले पराव के लिए कानपुर चले गए। राजकुमार शुक्ल उनके पीछे-पीछे कानपुर गए वहां फिर गांधी जी को तिनकाठिया कानून से त्रस्त किसानों के दुखों को विस्तार से बताया और एक बार बिहार का दौरा करने का आग्रह किया। गांधी जी ने समय मिलने पर आने का वादा किया और अपने अगले पराव अहमदाबाद के लिए निकल पड़े। वहां फिर शुक्ला जी ने उनसे मुलाकात की, इस बार गांधी जी ने कहा कि मैं कोलकाता जाने वाला हूं वहां से मैं चंपारण अवश्य आऊंगा।

गांधी जी के चंपारण सत्याग्रह से पहले भी कई प्रकार से भारत में आंदोलन होते रहते थे जिसमें एक गरम दल एवं दूसरा नरम दल था। गरम दल का विचार था कि अंग्रेजों को बिना हथियार के भगाया नहीं जा सकता, तो नरम दल आग्रह प्रार्थना करके अंग्रेजों के नीति का विरोध प्रकट करते थे परंतु गांधी जी दृढ़ निश्चायी माध्यम मार्गीय व्यक्ति थे। वे अंग्रेजों की नीति का विरोध अहिंसा के साथ तब तक करते थे जब तक वह अपने अन्यायकारी नीति को वापस ना ले ले। अतः यह भारत में नया परंतु पहला सत्याग्रह था जिसके कारण अंग्रेजों को तिनकठिया कानून रद्द करना पड़ा।

2. अहिंसक प्रतिरोध : गांधी जी का भारत भ्रमण यात्रा ही अहिंसक प्रतिरोध का नियम तैयार करने के लिए था। गांधी जी एक सच्चे सत्याग्रही नेतृत्वकर्ता थे। वे जानते थे कि भारत अभी सत्याग्रह के लिए तैयार नहीं है, वे पूरे देश घूम-घूम कर सत्याग्रह के बारे में कांग्रेस कार्यकर्ता एवं आम लोगों को बताने का कार्य करते थे। इसी कार्य को आगे बढ़ते हुए वे 11 अप्रैल 1917 को बिहार के सबसे बड़े शहर मुजफ्फरपुर पहुंचे। उसके अगले दिन उन्होंने कमिश्नर को एक आवेदन दिया कि मैं नील की खेती और उससे जुड़े किसानों के हालात का अध्ययन करने यहां आया हूं और उम्मीद करता हूं कि स्थानीय प्रशासन इसका संज्ञान लेगा और इसमें मेरा सहयोग करेगा। गांधी जी के पत्र से वहां के कमिश्नर के कान खड़े हो गए उन्होंने जिला मजिस्ट्रेट को आदेश दिया कि गांधी को धारा 144 के तहत चंपारण से बाहर कर दिया जाए।[3] इस पर गांधी ने जवाब दिया कि मैं यहां केवल किसानों की हालात जानने आया हूं। आंदोलन या हंगामा खड़ा करने नहीं, यह कार्य किए बिना में यहां से नहीं जा सकता हूं। इसके बाद अंग्रेजों ने गांधी के पीछे दो जासूस लगा दिए। गांधी चंपारण के दो मुख्य शहर मोतिहारी और बेतिया में रहकर एक-एक किसानों के शिकायत को नोट कर उन्होंने इसका अध्ययन किया। इसमें लगभग उन्होंने 7000 किसने की गवाहियां लिखा, इन गवाहियों के पर्चा लेकर वे लेफ्टिनेंट गवर्नर से मिले। इन पर्चा को देख कर लेफ्टिनेंट गवर्नर आश्चर्यचकित हो गए और इसके जांच के लिए एक कमेटी (चंपारण कृषि जांच समिति) का गठन किया जिसका एक सदस्य गांधी भी था। कमेटी ने उन बयानों का अध्ययन किया और

© Copyright @ Authors

इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि जिस प्रकार सदियों से निलहों द्वारा किसानों के साथ अत्याचार व बर्बरता किया गया वह असभ्यता पूर्ण व्यवहार है। कमेटी ने अपना रिपोर्ट सौंप दिया जिसमें किसानों के हक में फैसला आया। इस प्रकार गांधी जी ने बिना हथियार उठाये तिनकठिया और शरहबेशी जैसे काले कानून से चंपारण के किसानों को मुक्ति दिलाया।[4]

3. तिनकठिया प्रथा का अंत : भारतीय उपमहाद्वीप में नील की खेती प्राचीन काल से हो रही थी। 18वीं सदी के आखिर में ईस्ट इंडिया कंपनी ने यूरोप के बाजारों पर नियंत्रण करने के लिए नील की खेती को अपने कब्जे में ले लिया, बाहर के एवं कुछ भारत के श्वेतों ने बंगाल और बिहार में बड़े पैमाने पर नील की खेती शुरू करवाई। यह अंग्रेज निलहे मुख्यतः उनके बेटे थे जो अंग्रेज वकीलों पादरियों और सैन्य अधिकारी भारत के शुरुआती उपनिवेश के समय यहां आए थे।

19वीं सदी के उत्तरार्ध में सिर्फ चंपारण जिले में लगभग 1 लाख एकड़ जमीन पर नील की खेती होती थी। 1897 में जर्मनी में कृत्रिम(सिंथेटिक) नील का आविष्कार हो गया जिससे प्राकृतिक नील के कीमतों में काफी गिरावट हुई, इस कारण नील की खेती में भी काफी कमी हुई। प्रथम विश्व युद्ध की शुरुआत और जर्मनी से रास्ता अवरुद्ध हो जाने के वजह से फिर से बिहार से उत्पादित होने वाली नील की मांग बढ़ गया। इस कमी की वजह से होने वाले लाभ की भरपाई के लिए निलहें कोठी वाले अंग्रेज नील की खेती के लिए किसानों पर दबाव डालने लगे जहां 1914 तक नील की खेती लगभग 8171 एकड़ तक सिमट गया था उसे 1916 के बाद लगभग 21971 एकड़ तक बढ़ा दिया।[5]

नील की खेती कारखाने के मल्कियत एवं किसान की अपनी जमीन दोनों पर की जाती थी। अंग्रेजों द्वारा एक कठोर कानून (तिनकठिया) बनाया गया जिसमें किसान को अपने जमीन के 3/ 20 हिस्से एवं बाद में 1/ 10 हिस्से पर नील की खेती करना पड़ता था, ऐसा न करने वाले किसान पर फैक्ट्री का बढा हुआ किराया देना होता था जिसे (शहरबेशी) कहा जाता था। जो किसान ऐसा करने से इनकार करते उसकी जमीन कुर्क कर दी जाती थी। चंपारण के किसान अपने जमीन पर अपने मर्ज से खेती करना चाहते थे जिससे निलहे अंग्रेज नाराज होकर उसके साथ बर्बरता से पेश आते और आए दिन मारपीट करते थे। 20वीं सदी की शुरुआत में चंपारण के किसानों ने अपनी दुर्दशा के विरुद्ध आवाज उठाना शुरू किया, उन्होंने सभाएं की सरकार को आवेदन भेजा नील की खेती न करने की उन्होंने सामूहिक रूप से कसमें खाई। इस आंदोलन में राजकुमार शुक्ल भी शामिल थे। 1914 में शुक्ल ने यूरोपीय मैनेजर से झगड़ा करने के वजह से कुछ दिन के लिए जेल भी गए। दो साल बाद उन्होंने लखनऊ कांग्रेस के अधिवेशन में निलहों की बर्बरता का मुद्दा उठाया और गांधी जी को चंपारण यात्रा के लिए राजी कर लिया।[6] इसके बाद गांधी 1917 में चंपारण आए और

© Copyright @ Authors

सत्याग्रह के माध्यम से चंपारण के किसानों को तिनकठिया एवं शहरबेशी जैसे काले कानून को खत्म करवाया।

4. स्थानीय नेतृत्व एवं जनता का सहयोग : चंपारण की जनता सदियों से इस काले कानून से त्रस्त थे, वे चाहते थे कि किसी भी प्रकार इस काले कानून (तिनकाठिया) से मुक्ति मिल जाए। इसके लिए वहां के स्थानीय किसान ने एक संगठन के रूप में अपने जमीन पर नील की खेती न करने की शपथ भी लिया था लेकिन अंग्रेज के दबाव के कारण सफल नहीं हो रहे थे। राजकुमार शुक्ल किसानों के साथ-साथ मिलकर इस संगठन को नेतृत्व कर रहे थे इसी क्रम में वे कांग्रेस के लखनऊ अधिवेशन में तिनकाठिया के से त्रस्त किसानों के दर्दों को प्रमुखता से उठाया पर कांग्रेस के प्रमुख नेता मालवीय एवं तिलक इस मुद्दों को स्वतंत्रता आंदोलन के भटकाव के रूप में समझते थे, जिसके कारण उसने इस मुद्दे पर कुछ खास ध्यान नहीं दिया। तब राजकुमार शुक्ल ने कांग्रेस के दूसरे श्रेणी के नवयुवक नेता गांधी जी को चंपारण आने के लिए राजी कर लिया।[7]

जब यह तय हो गया कि गांधी जी चंपारण आएंगे, शुक्ला जी ने अपने मिशन में लग गए और चंपारण लौटे तो उन्होंने गांधी जी को एक पत्र लिखा, उसमें कहा कि चंपारण के 19 लाख शोषित जनता आपके चरण कमल के दर्शन हेतु व्याकुल है। और उन्हें आशा ही नहीं पूरा विश्वास है कि आपका चरण चंपारण की धरती पर पड़ेंगे और उनकी मुक्ति का मार्ग खुल जाएगा।[8]

एक ऐतिहासिक पल जब गांधी जी बिहार की धरती पर अपना कदम रखा उनके स्वागत के लिए किसानों के बड़े-बड़े झुंड उनके आगे पीछे थे। वे मुजफ्फरपुर के एक विद्वान जे० बि० कृपलानी के घर ठहरे। गांधी के पीछे किसानों का हुजूम देखकर वहां के कमिश्नर घबरा गए और डिस्ट्रिक्ट मैनेजर को लिखा कि गांधी को धारा 144 के तहत जल्द से जल्द बिहार से बाहर किया जाए लेकिन किसानों के समर्थन के आगे गांधी को 2 घंटे भी रोकना अंग्रेजी हुकूमत को नागवार गुजरा, वे गांधी को सपोर्ट करने लगे।

गांधी जी की सहायता के लिए पटना से वकीलों का एक समूह आया जिसमें ब्रजकिशोर प्रसाद एवं डॉ राजेंद्र प्रसाद भी थे। वे चंपारण के किसानों से जुड़े मसले को गांधी जी को बताने में मदद किया। किसानों ने भी हिम्मत दिखाई और लगभग 7000 की संख्या में रिपोर्ट लिखवाई जिस कारण सरकार को झुकना पड़ा। जब गांधी जी वापस जा रहे थे तो मुजफ्फरपुर स्टेशन पर गांधी जी को देखने हजारों की संख्या में लोग रेलवे स्टेशन पर पहुंच गए जिसमें महिला, पुरुष, वृद्ध व बच्चे भी शामिल थे। सभी ने गांधी जी को उद्धारकर्ता के रूप में दर्शन किया।

5. गांधी जी का भारतीय राजनीति में प्रवेश : यूं तो गांधी जी का प्रवेश भारतीय राजनीति में बहुत पहले हो चुका था। जब वह दक्षिण अफ्रीका प्रवास में गोपाल कृष्ण गोखले के दक्षिण

© Copyright @ Authors

अफ्रीका यात्रा में मुलाकात व उनके यात्रा के लिए विभिन्न स्थान पर भाषणों का आयोजन किया था। वे भारतीय अखबार एवं राजनीतिक जानकारों के बीच चर्चा के विषय बन गए थे। दक्षिण अफ्रीका से वापस आने के बाद देश भ्रमण ने उनके आंख खोल दिये और सच्ची भारतीय समस्याओं को जाना, तो देश सेवा का प्रण लेकर वे देश की समस्याओं पर विचार करना शुरू किया। यह विचार उन्हें राजनीति की ओर ले गया लेकिन गांधी जी का भारतीय राजनीति में असल पहचान उसकी चंपारण यात्रा को ही माना जा सकता है। गांधी जी चंपारण के किसानों के समस्याओं के ढेर को लेफ्टिनेंट गोवर्नर को दिया, उस साक्ष्य को चमत्कारिक व प्रभावशाली माना गया, जिससे गांधी जी सरकार एवं समाज के नजर में एक नेता के रूप में असाधारण क्षमता के धनी माने जाने लगे। गाँधी जी की चर्चा उसे समय के सभी प्रमुख समाचार पत्रों में किया गया, ब्रिटेन की सरकार भी सकते में आ गई, सरकार गांधी के नेतृत्व को देखते हुए तुरंत (चंपारण अग्रियन इंक्वारी कमिटी) चंपारण कृषि जांच समिति का गठन कर रिपोर्ट तैयार किया, जिसमें कमेटी का एक सदस्य गांधी जी को ही बनाया गया।[9] गांधी जी किसानों को तिनकाठिया कानून से मुक्ति दिलाने के साथ-साथ बिहार में साफ सफाई के मुद्दे एवं अंग्रेजो के शिक्षा नीति के खिलाफ बुनियादी शिक्षा एवं प्रौढ़ शिक्षा की शुरुआत की जो भारतीय राजनीति में गांधी जी के अलग पहचान बनाने का कार्य किया। इसके बाद गांधी जी भारत के राजनीतिक में आगे बढ़ते हीं गए।

6. प्रशासनिक सुधार : ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के खिलाफ चंपारण सत्याग्रह भारत के स्वतंत्रता संग्राम में एक ऐतिहासिक घटना थी यह 1917 से 18 के बीच बिहार के चंपारण जिले में हुआ गांधी जी एवं उनके सहयोगी और किसानों के व्यापक विरोध से भयभीत ब्रिटिश सरकार इसे हिंसक बल के माध्यम से दबाने का प्रयास किया। वे गांधी और अन्य सहयोगियों को गिरफ्तार करना चाहते थे लेकिन गांधी जी के अहिंसक प्रतिरोध के आगे उसे झुकना पड़ा और पहली बार उसे अपना कानून तिनकाठिया को समाप्त करने के लिए प्रशासनिक सुधार करना पड़ा। उन्होंने गांधी को साथ लेकर (चंपारण अग्रियन इंक्वारी कमिटी) का गठन किया जो गांधी जी द्वारा लिखित किसानों के साथ हो रहे बर्बरता एवं तिनकाठिया कानून से हुए किसानों के नुकसान को समझा और रिपोर्ट के आधार पर तिनकठिया कानून को समाप्त किया जिससे किसान को मुक्ति मिली।[10]

एक तरफ तिनकाठिया कानून समाप्त किया दूसरे तरफ गांधी जी चंपारण एवं उसके शहर व गांव मैं यात्रा कर इस निर्णय पर पहुंचा कि यहां के लोगों में शिक्षा और स्वास्थ्य की समस्या काफी दैनीय है, जिसके समाधान के लिए वे चंपारण में कुछ विद्यालय स्थापित करने का फैसला किया। उनके इस कार्य के लिए कई स्वयंसेवक सामने आए। कस्तूरबा गांधी भी अपने पति के सहायता के लिए वहां पहुंच गई। वे अपनी सेवाएं स्वयंसेवक के तौर पर स्कूल में शिक्षिका के रूप में दी। गांधी जी गांव के आगे-पीछे के रास्ते पर गंदगी को देखकर काफी दुखी हुए। वे गांव वालों को इस गंदगी से बचने के उपाय सिखाए। उन्होंने कहा कि गांव के हर एक व्यक्ति को भंगी का काम करना चाहिए। हर गांव में दो स्वयंसेवक सफाई के लिए

© Copyright @ Authors

नियुक्ति करनी चाहिए जो सफाई के साथ-साथ लोगों को हाथ जोड़कर समझा सके की शौचालय का उपयोग करें।

गांधीजी सविनय अवज्ञा, सत्याग्रह, स्वास्थ्य एवं शिक्षा के साथ कई और विषयों को अपने रचनात्मक कार्यों में शामिल किए थे। इस रचनात्मक कार्यों की शुरुआत चंपारण यात्रा को ही माना जा सकता है। वे रचनात्मक कार्यों में सभी भारतवासियों को शामिल करना चाहते थे। उनका मानना था की रचनात्मक कार्यों के माध्यम से भी स्वाधीनता हासिल किया जा सकता है। इसके माध्यम से लोगों को सत्याग्रह के लिए प्रशिक्षित भी करना आसान होगा एवं लोगों की समस्याओं का समाधान भी होगा।

निष्कर्ष : गांधी जी के चंपारण यात्रा के गहन अध्ययन से स्पष्ट होता है कि उनका चंपारण यात्रा न केवल एक राजनीतिक उद्देश्य था बल्कि उनकी यात्रा लाखों व्यक्तियों के लिए एक वरदान साबित हुआ जो निलहे एवं अंग्रेजी हुकूमत से त्रस्त थे। उनकी यह यात्रा उन लाखों व्यक्तियों के लिए भी वरदान साबित हुआ जो अशिक्षा के अंधकार में अपने जीवन को बिताने के लिए विवस व लाचार थे। उनकी यह यात्रा भारत के स्वाधीनता में मार्गदर्शन का काम किया। गाँधी जी यह यात्रा सत्याग्रह के विचारों को भारत में फ़ैलाने के लिए कर रहे थे लेकिन उनका यह यात्रा ही भारत में पहला सत्याग्रह साबित हो गया।

गांधी जी के चंपारण यात्रा का प्रभाव उनके कार्य से हुआ था। वे काले कानून के विरुद्ध अडिग रह कर सात हजार किसानो के बयान का रिपोर्ट तैयार किया जिससे विवस होकर लेफ्टिनेंट गवर्मेंट 'चंपारण कृषि जांच समिति' बनाया एवं अपने प्रशासनिक कानून में सुधार करवाया। इस यात्रा से गाँधी जी शिक्षा के क्षेत्र में काफी सुधार करवाए एवं अंग्रेजी शिक्षा के विरुद्ध बुनियादी व प्रोढ़ शिक्षा का सुरुआत किया। गावों के साफ सफाई के लिए लोगों को भंगी का काम करने के लिए विचार दिये। अंग्रेजी कानूनों के खौफ को समाप्त करने, अधिकारों की रक्षा, शिक्षा में परिवर्तन, स्वक्छता एवं सामाजिक जागरण जैसे विषयों के लिए गाँधी जी का चंपारण यात्रा आज भी प्रसांगिक है।

संदर्भ :-

[1] सी०एफ० एंड्रयूज को लिखा गांधी का पत्र, 15 जून 1933, CWMG LB पृष्ठ संख्या 198-99

[2] रामचंद्र गुहा, गांधी (1914 -31) खंड एक, पृष्ठ संख्या 27 - 31

[3] सिलेक्टेड डॉक्यूमेंट ऑफ़ महात्मा गांधी, पृष्ठ संख्या 58 - 62

[4] सिलेक्टेड डॉक्यूमेंट ऑफ़ महात्मा गांधी, पृष्ठ संख्या 396 - 99

[5] जैक पहुंचे पैड्स चंपारण और गांधी प्लांटर्स प्रेजेंट्स और गांधियन पॉलिटिक्स न्यू दिल्ली ऑक्सफोर्ड

यूनिवर्सिटी प्रेस 1999 अध्याय 1 - 3 पर आधारित

[6] पॉचेपेडास: चंपारण और गांधी, पृष्ठ संख्या 165f

© Copyright @ Authors

[7] ऑटोबायोग्राफी, खंड चार, अध्याय 12

[8] काली किंकर दत्ता, गांधी इन बिहार में उद्धृत, पटना गवर्नमेंट ऑफ इंडिया, पृष्ठ संख्या 3 - 4

[9] CWMG भाग 14, पृष्ठ संख्या 542 - 44

[10] रामचंद्र गुहा, गांधी (1914 – 31) खंड एक, पृष्ठ संख्या 40-47

© Copyright @ Authors